APNI KAKSHA BY KK MAHTO

बिहार बोर्ड कक्षा 12 इतिहास (History)

अध्याय 3: बंधुत्व, जाति तथा वर्ग (महाभारत) — 5 Marks VVI Questions

⭐ परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण (Repeated & Guessed) 5-अंकीय दीर्घ उत्तरीय प्रश्न ⭐

प्रश्नोत्तरी 1 **[बार-बार पूछा गया (2018, 2020, 2022, 2024)]**

प्र.1. महाभारत एक गतिशील ग्रंथ क्यों माना जाता है? इसके समालोचनात्मक संस्करण के महत्व का वर्णन करें।

उत्तर: महाभारत को एक 'गतिशील ग्रंथ' इसलिए कहा जाता है क्योंकि सदियों तक इसकी कहानियों, भाषा और संदेशों में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार निरंतर परिवर्तन, संवर्द्धन और पुनर्व्याख्या होती रही।
1. **ग्रंथ का विकास:** इस महाकाव्य के विभिन्न अंश संस्कृत के अलावा कई अन्य भाषाओं और रूपों में रचे गए।
2. **समालोचनात्मक संस्करण (Critical Edition):** वी.एस. सुकथंकर के नेतृत्व में विद्वानों ने विभिन्न लिपियों की पांडुलिपियों को एकत्र कर 1919 में इसका समालोचनात्मक संस्करण तैयार किया।
3. **ऐतिहासिक महत्व:** इसमें अनेक विविधताओं, समानताओं और सामाजिक संघर्षों के साक्ष्य मिलते हैं, जो प्राचीन भारतीय समाज को समझने में सहायक हैं।

प्रश्नोत्तरी 2 **[सर्वाधिक महत्वपूर्ण (2019, 2021, 2023, 2025)]**

प्र.2. महाभारत कालीन विवाह प्रणालियों और गोत्र व्यवस्था के नियमों की विवेचना करें।

उत्तर: प्राचीन भारतीय समाज (विशेषकर धर्मशास्त्रों और महाभारत) में विवाह और गोत्र के कड़े नियम थे:
1. **विवाह के प्रकार:** धर्मशास्त्रों में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है। चार को उत्तम (जैसे ब्राह्म विवाह) और चार को निंदित माना गया है। कन्यादान को पिता का महत्वपूर्ण कर्तव्य माना गया था।
2. **गोत्र व्यवस्था (Gotra System):** वैदिक काल के बाद ब्राह्मणों और अन्य जातियों में गोत्र व्यवस्था लागू की गई। इसके दो मुख्य नियम थे—गोत्र से बाहर विवाह करना (बहिर्गोत्र विवाह) और एक ही गोत्र में विवाह निषेध।
3. **स्त्री का गोत्र:** विवाह के पश्चात् स्त्रियों को पति का गोत्र अपनाना पड़ता था, किंतु सातवाहन राजवंश इसके अपवाद थे जहाँ रानियाँ पिता का गोत्र धारण करती थीं।

प्रश्नोत्तरी 3 **[बोर्ड परीक्षा स्पेशल (2020, 2022, 2024)]**

प्र.3. महाभारतकालीन समाज में वर्ण व्यवस्था और जातियों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: महाभारत काल में समाज मूल रूप से चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित था, जिसे 'चातुर्वरुण्य' कहा जाता था:
1. **ब्राह्मण और क्षत्रिय:** समाज में सर्वोच्च स्थान ब्राह्मणों (अध्ययन-अध्यापन) और क्षत्रियों (शासन और रक्षा) का था।
2. **वैश्य और शूद्र:** वैश्यों का मुख्य कार्य कृषि, व्यापार और पशुपालन था, जबकि शूद्रों को अन्य तीनों वर्णों की सेवा का दायित्व सौंपा गया था।
3. **जाति और जन्म आधारित व्यवस्था:** धर्मशास्त्रों के अनुसार वर्ण का निर्धारण जन्म पर आधारित था, लेकिन महाभारत में इसके कई अपवाद भी मिलते हैं (जैसे शूद्र राजा या क्षत्रिय ऋषि)।
4. **निषाद और दस्यु:** वर्ण व्यवस्था से बाहर के जंगलों में रहने वाले समुदायों (जैसे एकलव्य) को निम्न स्थान दिया गया।

प्रश्नोत्तरी 4 **[परीक्षा उपयोगी गेस प्रश्न (2019, 2021, 2023, 2025)]**

प्र.4. महाभारत में पितृवंशिकता (Patriliny) के आदर्शों तथा स्त्री-पुरुष संबंधों का वर्णन करें।

उत्तर: महाभारत का केंद्रीय कथानक उत्तराधिकार और सत्ता के लिए 'पितृवंशिकता' पर आधारित है:
1. **पितृवंशिक व्यवस्था:** इसके अंतर्गत पिता की मृत्यु के बाद उसके पुत्र (और उसके बाद पौत्र) संपत्ति और सत्ता के उत्तराधिकारी होते थे, जैसा कि कौरवों और पांडवों के संघर्ष में देखा गया।
2. **पुत्र का महत्व:** वंश को आगे बढ़ाने और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए पुत्र प्राप्ति को आवश्यक माना जाता था, हालांकि कुछ विशेष परिस्थितियों में भाइयों या नियोग प्रथा का भी सहारा लिया जाता था।
3. **स्त्रियों की स्थिति और अधिकार:** महिलाओं को सामान्यतः पैतृक संपत्ति में अधिकार नहीं था, किंतु द्रौपदी जैसे पात्रों का राजनीतिक जीवन और अधिकार इस परंपरा के अनूठे आयाम प्रस्तुत करते हैं।

💡 **टिप:** बिहार बोर्ड परीक्षा में 5 अंकों के दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर सटीक शीर्षकों (Headings) और बुलेट पॉइंट्स में लिखें ताकि पूरे अंक प्राप्त हो सकें। — **APNI KAKSHA BY KK MAHTO**